IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संस्कृत व्याकरण एवं न्याय परम्परा में सन् प्रत्यय: मिथिला के विशेष सन्दर्भ में एक दार्शनिक एवं भाषाई विश्लेषण

डॉ० मीरा कुमारी
सहायक प्राध्यापिका (अतिथि शिक्षक)
संस्कृत विभाग,
रामेश्वर महाविद्यालय, बी.आर.ए.बी.यू. मुजफ्फरपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र संस्कृत व्याकरण के 'सन्' प्रत्यय (Desiderative Suffix) के अभिप्राय और उसके प्रयोग का विशद विवेचन प्रस्तुत करता है, जिसे मिथिला की सुदृढ़ न्याय और व्याकरण परम्परा के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया गया है। पाणिनीय व्याकरण में 'धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा' (३.१.७) सूत्र के माध्यम से जिस 'इच्छा' (Desire) को 'सन्' प्रत्यय का मूल अर्थ माना गया है, उसका दार्शनिक विस्तार नव्य-न्याय के 'इच्छा-विचार' और 'शब्द-बोध' की प्रक्रियाओं में गहराई से मिलता है। मिथिला, जो प्राचीन काल से ही अक्षपाद गौतम, वाचस्पति मिश्र और उदयनाचार्य जैसे मनीषियों की भूमि रही है, ने व्याकरणिक नियमों को तार्किक सूक्ष्मता प्रदान करने में अद्वितीय भूमिका निभाई है । यह लेख 'सन्' प्रत्यय की प्रक्रियात्मक संरचना, उसके अर्थ-निर्धारण में 'इच्छा' के स्वरूप और मिथिला के नैयायिकों द्वारा प्रतिपादित 'शक्ति' एवं 'लक्षण' के सिद्धान्तों के आलोक में इसके प्रयोगों का अन्वेषण करता है। इसके अतिरिक्त, शोध में मिथिला की शैक्षिक संस्कृति, जैसे 'धौत-परीक्षा' और 'तत्त्वचिन्तामणि' जैसे ग्रन्थों के प्रभाव को भी सम्मिलित किया गया है, जो संस्कृत वाङ्मय की वैज्ञानिकता को रेखांकित करते हैं।

संकेत शब्द (Keywords)

सन् प्रत्यय, पाणिनीय व्याकरण, मिथिला, नव्य-न्याय, इच्छा (Desire), गंगेश उपाध्याय, तत्त्वचिन्तामणि, शब्द-बोध, अवच्छेदकता, धौत-परीक्षा।

१. उपोद्घात: संस्कृत भाषा और मिथिला की विद्वत्तापूर्ण विरासत

संस्कृत साहित्य मानवीय इतिहास की सबसे समृद्ध बौद्धिक परम्पराओं में से एक है, जो न केवल सांस्कृतिक पहचान के भंडार के रूप में कार्य करती है बल्कि प्रारंभिक वैज्ञानिक जांच और तार्किक विमर्श की आधारशिला भी रही है । प्राचीन और मध्यकालीन भारत में वैज्ञानिक सोच के विकास और संस्कृत छात्रवृत्ति के बीच गहरे अंतर्संबंधों ने एक ऐसी पद्धति को जन्म दिया जहाँ व्याकरण केवल भाषा का अनुशासन नहीं, बल्कि सत्य तक पहुँचने का एक माध्यम बन गया। मिथिला क्षेत्र, जिसे तिरहुत या तीराभुक्ति के नाम से भी जाना जाता है, अपनी प्राकृतिक बाधाओं के बावजूद सहस्राब्दियों से ज्ञान के सभी चरणों में चमकता रहा है ।

मिथिला का साहित्यिक इतिहास अपनी प्राचीनता और निरंतरता के लिए अद्वितीय है। इस क्षेत्र का सबसे बड़ा योगदान न्याय दर्शन है, जिसने भारतीय दर्शन के स्वरूप को निर्धारित किया। न्याय दर्शन, जो अक्षपाद गौतम के 'न्यायसूत्र' से

आरम्भ हुआ, मिथिला में वाचस्पति मिश्र और उदयनाचार्य जैसे दिग्गजों के माध्यम से विकसित हुआ। उदयनाचार्य की 'न्यायकुसुमांजलि' ने उस तार्किक प्रक्रिया का निर्माण किया जो बाद में नव्य-न्याय की जटिल भाषा का स्रोत बनी । पाणिनीय व्याकरण की स्पष्टता वैज्ञानिक प्रवचन के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त थी, जो जटिल विचारों को व्यवस्थित रूप से व्यक्त करने की अनुमति देती थी।

२. सन् प्रत्यय का व्याकरणिक अभिप्राय: पाणिनीय परिप्रेक्ष्य

पाणिनीय अष्टाध्यायी में 'सन्' प्रत्यय को धातु-निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। इसका मुख्य सूत्र है: '**धातोः कर्मणः समानकर्तृकादिच्छायां वा' (३.१.७)**।

२.१ सूत्र का विश्लेषण और अर्थ-व्याप्ति

इस सूत्र के अनुसार, किसी धातु से 'इच्छा' अर्थ में 'सन्' प्रत्यय तब होता है जब क्रिया की इच्छा करने वाला और क्रिया को करने वाला एक ही व्यक्ति (समानकर्तृक) हो। उदाहरण के लिए, 'पठितुम् इच्छति' में कर्ता स्वयं पढ़ना चाहता है, अतः यहाँ 'पठ्' धातु से 'सन्' होकर 'पिपठिषति' रूप बनता है । संस्कृत व्याकरण की यह परिशुद्धता वैज्ञानिक और तार्किक विमर्श के लिए इसे एक सटीक भाषा बनाती है।

२.२ प्रक्रियात्मक विशेषताएँ

'सन्' प्रत्यय के बिना क्रिया का अर्थ अपूर्ण रहता है जब वह इच्छा के सन्दर्भ में हो। इसमें 'द्वित्व' (Reduplication) की प्रक्रिया अपनाई जाती है, जैसे 'भू' धातु से 'बुभूषति' । यह संरचनात्मक सूक्ष्मता संस्कृत की उस परिशुद्धता को दर्शाती है जिसका उपयोग आधुनिक 'कम्प्यूटेशनल लिंग्विस्टिक्स' में भी किया जा सकता है ।

३. मिथिला की नव्य-न्याय परम्परा और भाषाई सूक्ष्मता

नव्य-न्याय का उदय १३वीं शताब्दी में गंगेश उपाध्याय द्वारा लिखित 'तत्त्वचिन्तामणि' से माना जाता है। नव्य-न्याय केवल एक दार्शनिक सम्प्रदाय नहीं था, बल्कि इसने एक 'परिष्कृत तकनीकी भाषा' विकसित की, जिसने व्याकरण को भी प्रभावित किया ।
नव्य-नैयायिकों ने भाषा के किसी भी अर्थ को निश्चित करने के लिए 'अवच्छेदकता' (Delimitation) का सिद्धान्त प्रतिपादित किया । 'सन्' प्रत्यय के संदर्भ में, जब हम 'पिपठिषति' कहते हैं, तो वहाँ 'पठन-विषयिणी इच्छा' का बोध होता है, जहाँ 'इच्छा' का 'अवच्छेदक' वह क्रिया है जिसकी इच्छा की जा रही है।

४. 'सन्' प्रत्यय और 'इच्छा' का दार्शनिक स्वरूप

न्याय दर्शन के अनुसार, 'इच्छा' आत्मा का एक गुण है । गंगेश उपाध्याय के 'तत्त्वचिन्तामणि' में शब्द-बोध की प्रक्रिया के दौरान प्रत्ययों के अर्थ पर सूक्ष्म विचार किया गया है। 'सन्' प्रत्यय के माध्यम से व्यक्त होने वाली इच्छा ही व्यक्ति को क्रिया की ओर प्रवृत्त करती है। यह तार्किक संरचना मानसिक अवस्थाओं और क्रिया के संबंधों का अध्ययन करने के लिए अत्यंत सटीक है।

५. मिथिला के ऐतिहासिक विद्वान और योगदान

मिथिला की ज्ञान परम्परा उन आचार्यों से पुष्ट हुई जिन्होंने व्याकरण और न्याय को जोड़ा। उदयनाचार्य (१०वीं शताब्दी) ने 'न्यायकुसुमांजलि' जैसे ग्रन्थों के माध्यम से तर्क की एक ऐसी श्रृंखला प्रदान की जहाँ भाषा के प्रत्येक प्रत्यय का वैज्ञानिक विश्लेषण सम्भव हुआ । गंगेश उपाध्याय ने 'तत्त्वचिन्तामणि' के माध्यम से इसे व्यवस्थित किया, जिस पर बाद में अनेक महत्वपूर्ण टीकाएँ लिखी गईं ।

विद्वान का नाम	मुख्य योगदान	सन्दर्भ
वाचस्पति मिश्र	न्यायसूचीनिबन्ध, तात्पर्यटीका	
उदयनाचार्य	न्यायकुसुमांजलि, किरणावली	
गंगेश उपाध्याय	तत्त्वचिन्तामणि	
पक्षधर मिश्र	आलोक टीका	
मुरलीधर ठक्कुर	सिद्धान्तसेतुः	

६. मिथिला की अनूठी परीक्षा पद्धति: धौत-परीक्षा

मिथिला में विद्वत्ता का प्रमाण 'धौत-परीक्षा' (Dhaut Pariksha) के माध्यम से सिद्ध करना होता था, जो दरभंगा राज के काल में स्थापित एक सर्वोच्च परीक्षा थी।

- **लाल धोती:** न्याय शास्त्र में निपुणता के लिए।
- **सफेद धोती:** व्याकरण शास्त्र के विशेषज्ञों के लिए।

'सन्' प्रत्यय जैसे सूक्ष्म व्याकरणिक विषयों पर शास्त्रार्थ करना इस परीक्षा का अभिन्न अंग था । महाराजा कामेश्वर सिंह ने १९५१ में 'मिथिला संस्कृत शोध संस्थान' की स्थापना कर इस विरासत को संरक्षित किया ।

७. तकनीकी शब्दावली और भाषाई महत्व

नव्य-न्याय द्वारा विकसित तकनीकी भाषा संस्कृत व्याकरण के नियमों को गणितीय सटीकता

प्रदान करती है । 'सन्' प्रत्यय का भाषाई विश्लेषण इसी यथार्थपरक तर्क पद्धति का हिस्सा है।

शब्द	तार्किक उपयोग	सन्दर्भ
अवच्छेदक (Avacchedaka)	अर्थ की अनिश्चितता दूर करना	
प्रतियोगिता (Pratiyogita)	अभाव को परिभाषित करना	
विषयता (Vishayata)	ज्ञान के विषय का निर्धारण	

८. आधुनिक काल में प्रासंगिकता

आज संस्कृत व्याकरण की संरचना और नव्य-न्याय की तर्कपद्धति को 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (AI) के लिए उपयुक्त माना जा रहा है । पाणिनी के नियम एक 'प्रोग्रामिंग कोड' की तरह कार्य करते हैं और 'सन्' प्रत्यय की प्रक्रियात्मक शुद्धता कम्प्यूटेशनल एल्गोरिदम के निर्माण में सहायक हो सकती है ।

९. उपसंहार

यह शोध 'सन्' प्रत्यय के व्याकरणिक अभिप्राय को मिथिला की न्याय परम्परा के साथ जोड़कर एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। 'सन्' प्रत्यय केवल इच्छा को व्यक्त करने वाला चिह्न नहीं, बल्कि यह तार्किक सूक्ष्मता का संगम है। मिथिला के नैयायिकों ने जिस तरह से भाषा को सत्य की कसौटी पर परखा, उसने संस्कृत व्याकरण को एक ऐसी ऊँचाई प्रदान की जहाँ प्रत्येक प्रत्यय का एक निश्चित अर्थ निर्धारित हुआ।

सन्दर्भ (References)

१. दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य, *मिथिला में नव्य-न्याय का इतिहास*, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा।

२. अक्षपाद गौतम, *न्यायसूत्र* (वात्स्यायन भाष्य एवं बद्रीनाथ शुक्ल की व्याख्या सहित)।

३. गंगेश उपाध्याय, *तत्त्वचिन्तामणि* (मथुरी टीका एवं बद्रीनाथ शुक्ल के सम्पादन सहित), वाराणसी।

४. उदयनाचार्य, *न्यायकुसुमांजलि* (आमोद, विवेक एवं परिमल टीकाओं सहित), मिथिला संस्थान।

५. केशव मिश्र, *तर्कभाषा* (बद्रीनाथ शुक्ल द्वारा हिन्दी व्याख्या सहित), चौखम्बा, वाराणसी।

६. अन्नमभट्ट, *तर्कसंग्रह* (दीपिका टीका एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

७. विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य, *न्यायसिद्धान्तमुक्तावली* (कारिकावली पर स्वोपज्ञ टीका)।

८. गदाधर भट्टाचार्य, *व्युत्पत्तिवाद* (बच्चा झा की गूढार्थ तत्त्वालोक टीका सहित), मिथिला संस्थान।

९. पक्षधर मिश्र, *तत्त्वचिन्तामणि-आलोक* (नव्य-न्याय की प्रसिद्ध टीका)।

१०. मुरलीधर ठक्कुर, *सिद्धान्तसेतुः*, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा।

११. शशनाथ झा, *त्रितलावच्छेदकतावादः*, मिथिला शोध संस्थान, अर्कैलोजी सीरीज।

१२. वाचस्पति मिश्र, *न्यायवार्तिक-तात्पर्यटीका*, मिथिला ज्ञान परम्परा का आधार।

१३. उद्योतकर, *न्यायवार्तिक* (न्याय सूत्रों पर प्राचीन व्याख्या)।

१४. रघुनाथ शिरोमणि, *पदार्थतत्त्वनिरूपणम्* (नव्य-न्याय का तत्त्वमीमांसीय ग्रन्थ)।

१५. हरिराम तर्कवागीश, *रत्नकोषमतवादार्थः*, मिथिला शोध संस्थान।

१६. रामावतार शर्मा, *प्रकीर्णप्रबन्धाः* (संस्कृत विद्वत्ता पर लेख संग्रह)।

१७. सतीशचन्द्र विद्याभूषण, *भारतीय न्यायशास्त्र का इतिहास* (प्राचीन एवं आधुनिक काल)।

१८. राधाकृष्ण चौधरी, *मैथिली साहित्य का सर्वेक्षण*, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली।

१९. मथुरनाथ तर्कवागीश, *तत्त्वचिन्तामणि-रहस्य (मथुरी टीका)*, वाराणसी संस्करण।

२०. धर्मदत्त 'बच्चा' झा, *सुलचनामाधव-चम्पू*, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान।